गिल्लू
कक्षा - नवी

विषय – हिंदी
पाठ : ३
पाठ का नाम :गिल्लू
PPT-3

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

7. भूख लगने पर चिक-चिक ....मुक्त करना आवश्यक है।

शब्दार्थ -

गंध - खुशबू
हौले-हौले - धीरे-धीरे
मुक्त - आजाद

व्याख्या - लेखिका कहती है कि जब गिल्लू को उस लिफ़ाफ़े में बंद पड़े-पड़े भूख लगने लगती तो वह चिक-चिक की आवाज करके मानो लेखिका को सूचना दे रहा होता कि उसे भूख लग गई है और लेखिका के द्वारा उसे काजू या बिस्कुट मिल जाने पर वह उसी स्थिति में लिफ़ाफ़े से बाहर वाले पंजों से काजू या बिस्कुट पकड़कर उसे कुतरता। लेखिका के घर में रहते हुए फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम बसंत आया। नीम-चमेली की खुशबू लेखिका के कमरे में धीरे-धीरे फैलने लगी। लेखिका कहती है कि बाहर की गिलहरियाँ उसके घर की खिड़की की जाली के पास आकर चिक-चिक करके न जाने क्या कहने लगीं? जिसके कारण गिल्लू खिड़की से बाहर झाँकने लगा। गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से इस तरह बाहर झाँकते देखकर लेखिका को लगा कि इसे आजाद करना अब जरुरी है।

8. मैंने कीलें निकालकर.....................................नित्य का क्रम हो गया।

शब्दार्थ -

समस्या - परेशानी

आवश्यक - जरुरी

नित्य - हमेशा

व्याख्या - लेखिका कहती है कि गिल्लू को खिड़की से बाहर देखते हुए देखकर उसने खिड़की पर लगी जाली की कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस रास्ते से गिल्लू जब बाहर गया तो उसे देखकर ऐसा लगा जैसे बाहर जाने पर सचमुच ही उसने आजादी की साँस ली हो। इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते, बिल्लियों से बचाना भी एक बहुत बड़ी परेशानी ही थी। क्योंकि वह आज तक केवल घर के अंदर ही रहता था इसलिए बाहर जाने पर उसे बाहर के खतरों से बचने में काफी परेशानी हुई। लेखिका को जरुरी कागज़ो-पत्रों के कारण बाहर जाना पड़ता था और उसके बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता था। लेखिका कहती है कि उसने कॉलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला और अंदर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू अपने उस जाली के दरवाजे से अंदर आया और लेखिका के पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। उस दिन से यह हमेशा का काम हो गया था।

9. मेरे कमरे से बाहर जाने .... ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता।

शब्दार्थ -

राह - रास्ता

उत्पन्न - पैदा

स्मरण - याद

व्याख्या - लेखिका कहती है कि जैसे ही वह कॉलेज जाने के लिए कमरे से बाहर जाती थी गिल्लू भी खिड़की की खुली जाली रास्ते से बाहर चला जाता था और दिन भर गिलहरियों के झुंड का नेता बना हर एक डाल से दूसरी डाल पर उछलता-कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता। लेखिका कहती है कि गिल्लू को उसे चौंकाने की इच्छा न जाने कब और कैसे पैदा हो गई थी। वह कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में छिप कर लेखिका को चौंका देता था। लेखिका के पास बहुत से पशु-पक्षी थे जो लेखिका के पालतू भी थे और उनका लेखिका से लगाव भी कम नहीं था, परंतु उनमें से किसी भी लेखिका के साथ उसकी थाली में खाने की हिम्मत हुई हो, ऐसा लेखिका को याद नहीं आता। इसका अर्थ यह है की गिल्लू लेखिका की थाली में से ही भोजन खा लिया करता था।

10. गिल्लू इनमें अपवाद ……………………………..लेना बंद कर देता या झूले से नीचे फेंक देता था।

शब्दार्थ -

अपवाद - सामान्य नियम को मर्यादित करने वाला

खाद्य - भोजन

व्याख्या - लेखिका कहती है कि गिल्लू उसके पाले हुए सभी पशु-पक्षियों में सबसे अलग था क्योंकि वह लेखिका के द्वारा बनाए गए सामान्य नियमों का पालन नहीं करता था। लेखिका जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह भी खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार और बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता था और लेखिका की थाली में बैठ जाना चाहता था। बड़ी कठिनाई से लेखिका ने उसे थाली के पास बैठना सिखाया जहाँ बैठकर वह लेखिका की थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफ़ाई से खाता रहता था। काजू गिल्लू का सबसे मनपसंद भोजन था और यदि कई दिन तक उसे काजू नहीं दिया जाता था तो वह अन्य खाने की चीजें या तो लेना बंद कर देता था या झूले से नीचे फेंक देता था।

11. उसी बीच मुझे मोटर .... परिचारिका के हटने के समान लगता।

शब्दार्थ -

आहत - ज़ख्मी, घायल

घोंसले - नीड़, रहने की जगह

परिचारिका - सेविका

व्याख्या - लेखिका कहती है कि उसी बीच उसे मोटर दुर्घटना में घायल होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब कोई लेखिका के कमरे का दरवाजा खोलता तो गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता, उसे लगता कि लेखिका आई है और फिर जब वह लेखिका की जगह किसी दूसरे को देखता तो वह उसी तेजी के साथ अपने घोंसले में जा बैठता। तो भी लेखिका के घर जाता वे सभी गिल्लू को काजू दे आते, परंतु अस्पताल से लौटकर जब लेखिका ने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे लेखिका को पता चला कि वह उन दिनों अपना मनपसंद भोजन भी कितना कम खाता रहा। लेखिका की अस्वस्थता में वह तकिए पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हे-नन्हे पंजों से लेखिका के सिर और बालों को इतने धीरे-धीरे सहलाता रहता कि जब वह लेखिका के सिरहाने से हटता तो लेखिका को ऐसा लगता जैसे उसकी कोई सेविका उससे दूर चली गई हो।

12. गर्मियों में जब मैं दोपहर ……………… जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न में पकड़ा था।

शब्दार्थ -

सर्वथा - सब प्रकार से

समीप - नजदीक

अवधि - समय

यातना - दुःख

मरणासन्न - मृत्यु के समीप पहुँच जाने वाला

व्याख्या - लेखिका कहती है कि गर्मियों में जब वह दोपहर में अपना काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता था और न ही अपने झूले में बैठता था। गिल्लू ने लेखिका के नजदीक रहने के साथ-साथ गर्मी से बचने का एक सबसे नया उपाय खोज निकाला था। वह लेखिका पास रखी हुई सुराही पर लेट जाता था, जिससे वह लेखिका के नजदीक भी बना रहता और ठंडक में भी रहता। इस तरह उसने दो काम एक साथ करना सीख लिया था। लेखिका कहती है कि गिलहरियों के जीवन का समय दो वर्ष से अधिक नहीं होता, इसी कारण गिल्लू की जीवन यात्रा का अंत भी नजदीक आ ही गया। दिन भर उसने न कुछ खाया न बाहर गया। रात में अपने जीवन के अंतिम क्षण में भी वह अपने झूले से उतरकर लेखिका के बिस्तर पर आया और अपने ठंडे पंजों से लेखिका की वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन में पकड़ा था जब वह मृत्यु के समीप पहुँच गया था।

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP